B- III
L- 21
MIH

सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन

क्या :- • मुख्यतः 19वीं सदी में सामाजिक धार्मिक कुरीतियों को दूर करने के लिए चलाया गया आन्दोलन, हालाँकि यह आन्दोलन 20वीं सदी में भी जारी रहा और इसे आज भी देख सकते हैं।

• प्रमुख सामाजिक कुरीतियाँ थी– बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवाओं की दयनीय दशा, अशिक्षा, जाति प्रथा, छुआछूत इत्यादि

• प्रमुख धार्मिक कुरीतियाँ थी– पुरोहितवाद, मूर्तिपूजा बहुदेववाद, कर्मकाण्ड, अंधविश्वास

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

कारण :-

• बड़े पैमाने पर सामाजिक धार्मिक कुरीतियों का प्रचलन।

• आधुनिक शिक्षा के साथ आधुनिक विचारों का प्रसार जैसे- समानता, स्वतंत्रता, मानवतावाद, तर्कबुद्धिवाद या वैज्ञानिक सोच, लोकतांत्रिक विचार, राष्ट्रीयता संबंधी विचार, पंथनिरपेक्ष दृष्टिकोण इत्यादि।

- 19वीं सदी में भारतीय समाज में मध्यवर्ग का उदय, इस वर्ग पर आधुनिक विचारों का प्रभाव और इस वर्ग द्वारा सामाजिक धार्मिक कुरीतियों को दूर कर एक आधुनिक समाज के निर्माण का प्रयास प्रारम्भ किया गया।
- ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों के कारण भी सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन की पृष्ठभूमि निर्मित हुई। एक तरफ मिशनरियों ने शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना की इससे आधुनिक विचारों का प्रसार हुआ, वही दूसरी तरफ मिशनरियों के धर्मांतरण संबंधी प्रयासों के प्रतिक्रिया स्वरूप भी सुधारों के लिए कदम उठाए गए।
- प्राचीन भारतीय ग्रंथो के अंग्रेजी में अनुवाद के कारण प्राचीन भारतीय विचारों का प्रसार हुआ, प्राचीन कालीन उपलब्धियों से परिचय हुआ और इससे भी आत्म-विश्वास बढ़ा तथा सुधारों के लिए प्रेरणा भी मिली।
- नए राजनीतिक आर्थिक प्रवेश ने भी सुधारों के लिए अनुकूल वातावरण को निर्मित किया
- रेलवे ने भी समाज सुधार की गतिविधियों को सकारात्मक तौर पर प्रभावित किया और उत्प्रेरक का कार्य किया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

तथ्यात्मक

सुधारवादी :-

उन सुधारकों को सुधारवादी आन्दोलन की श्रेणी में रखा जाता है जिनके द्वारा सामाजिक धार्मिक सुधार के लिए अपने धर्म ग्रन्थों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया, वैज्ञानिक प्रमाणों को भी आधार बनाया गया और अन्य धर्मों के अच्छे तत्वों से सीखने पर बल दिया गया।

पुनरूत्थानवादी :-

उन सुधारकों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है जिन्होने सामाजिक, धार्मिक सुधार के लिए केवल अपने धर्म ग्रन्थों को आधार बनाया और इनमें अपने- अपने धर्मों को श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति रही है।

जैसे- आर्य समाज, देवबंद आन्दोलन इत्यादि।

पुनर्जागरण :-

19वीं सदी में आधुनिक विचारों को आधार बनाकर सामाजिक धार्मिक कुरीतियों को दूर करने के लिए चलाए गए आन्दोलन को ही भारतीय पुनर्जागरण कहा जाता है।

मध्य वर्ग :- शिक्षित वर्ग, वकील, पत्रकार, डॉक्टर, प्रशासक इंजीनियर, लेखक, विचारक, उद्योगपति इत्यादि।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* राजा राम मोहन राय

- 19वीं सदी में भारत में सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन में राजा राममोहन राय का एक विशिष्ट स्थान है इन्हे भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत भी कहा जाता है।

सामाजिक क्षेत्र में भूमिका :-

महिलाओं की दृष्टिकोण से :-

- महिलाओं में प्रचलित विभिन्न कुरीतियों की कठोर शब्दों में आलोचना की जैसे→ बाल विवाह सती प्रथा, विधवाओं की दयनीय दशा, अशिक्षा इत्यादि
- इन्होने महिलाओं की शिक्षा के अधिकार का समर्थन किया और पैतृक संपत्ति में भी महिलाओं के अधिकार का समर्थन किया।
- 1829 ई० में सती प्रथा को रोकने के लिए जो कानून बना उसमें राम मोहन राय की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

जाति प्रथा की दृष्टिकोण से :-

- राम मोहन राय ने जाति प्रथा की कटु शब्दों में आलोचना की। उनका मानना था यह समाज को दो प्रकार से कमजोर कर रहा है एक जातियों में विभिन्न प्रकार के विभाजन के

KGS IAS

कारण भेदभाव को बढ़ावा मिलता है और दूसरा यह एकता को कमजोर करता है।

शिक्षा की दृष्टिकोण से :-

- राम मोहन राय अंग्रेजी भाषा में पाश्चात्य शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। और शिक्षा को आधुनिक परिवर्तनों का माध्यम मानते थे।
- इन्होनें समाज के सभी वर्गों तक शिक्षा की पहुँच हो, इस विचार का समर्थन किया और कुछ शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना में भी योगदान दिया जैसे →
  - 1817 में कलकत्ता में इंग्लिश स्कूल की स्थापना की
  - 1817 में ही एक यूरोपियन व्यक्ति 'डेविड हेअर' ने कलकत्ता में हिन्दू कालेज की स्थापना की। राममोहन राय ने इनका समर्थन किया।
  - 1825 में कलकत्ता में वेदांत कालेज की स्थापना।

धार्मिक क्षेत्र में :-

- इन्होने मूर्तिपूजा, पुरोहितवाद, बहुदेववाद, अंधविश्वास कर्मकाण्ड इत्यादि की आलोचना की।
- इन्होने एकेश्वरवाद में आस्था व्यक्त की।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

- सामाजिक धार्मिक सुधार के लिए धर्म ग्रन्थों के साथ-साथ तर्क को भी आधार बनाया।
- इन्होंने दुनिया मे स्थापित सभी धर्मों को सत्य के मार्ग पर चलने वाला बताया अर्थात् धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया।
- अन्य धर्मों के अच्छे तत्वों को भी स्वीकार करने का समर्थन किया।
- सामाजिक धार्मिक सुधार के लिए इन्होंने 1815 में आत्मीय सभा और 1828 में ब्रह्म सभा नामक संस्था की स्थापना की।

नोट :-

- सामाजिक धार्मिक सुधारों के लिए इन्होंने प्रेस का उपयोग किया जैसे संवाद कौमुदी (बंगला 1821)
  - मीरातुल अखबार (फारसी 1822)
  - एकेश्वरतादियों का उपहार - 1809 (किताब)
  - प्रिसेप्ट आफ जीसस - 1820 (किताब)
- इन्हे भारतीय पत्रकारिता का अग्रदूत कहा जाता है।
- ये विभिन्न भाषाओं के जानकार थे जैसे- संस्कृत बंगला, फारसी, ग्रीक, हिब्रू इत्यादि

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- उन्होंने वेदों एवं उपनिषदों का बंग्ला भाषा में अनुवाद किया और वेदों को अपौरूषेय नहीं माना।

आर्थिक क्षेत्र में :-

भारत में आधुनिक उद्योगों की मांग :-

- जमींदारों की तरह किसानों से भी भू राजस्व को स्थायी किया जाए।
- धन के अपव्यय को रोका जाए।

राजनीतिक क्षेत्र में :-

- प्रेस की स्वतंत्रता की मांग।
- उच्च पदों पर भारतीयकरण किया जाए।
- कार्यपालिका से न्यायपालिका को पृथक रखा जाए।
- 1821 नेपल्स में आन्दोलन की विफलता से आहत थे।
- 1823 में दक्षिण अमेरिका मे राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता पर भोज का आयोजन किया।

प्रश्न- राममोहन राय को आधुनिक भारत का प्रथम नेता क्यों कहते हैं?

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES A Trusted Learning Platform KHAN SIR